पत्र १० पर जलाधिवास प्रारंभ हुआ पत्र १० पर समाप्त हुआ पत्र १० पर प्रथम दिन कृत्य समाप्त हुआ।

पत्र ११ से द्वितीय दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १२ पर समाप्त

पत्र १३ से तृतीय दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १४ पर समाप्त हुआ

Acc. 124

अथ नारदपंचरात्रे श्रीप्रकाश प्रति

प्रतिष्ठाविधि

1

अथ पंचरात्रोक्त मार्गतः प्रतिष्ठाविधिः प्रारंभः पत्र १७

पत्र १७ पर समाप्त

पत्र १७ पर जलाधिवास प्रारंभ पत्र १८ पर समाप्त हुआ

पत्र १९ से द्वितीय दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २० पर समाप्त हुआ

पत्र २१ से तृतीय दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २२ पर समाप्त हुआ

पत्र २३ से चतुर्थ दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २४ पर समाप्त हुआ

पत्र २५ से पंचम दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २६ पर समाप्त हुआ

पत्र २७ से षष्ठ दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २८ पर समाप्त हुआ

पत्र २९ से सप्तम दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३० पर समाप्त हुआ

पत्र ३१ से अष्टम दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३२ पर समाप्त हुआ

पत्र ३३ से नवम दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३४ पर समाप्त हुआ

पत्र ३५ से दशम दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३६ पर समाप्त हुआ

पत्र ३७ से एकादश दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३८ पर समाप्त हुआ

पत्र ३९ से द्वादश दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४० पर समाप्त हुआ

पत्र ४१ से त्रयोदश दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४२ पर समाप्त हुआ

पत्र ४३ से चतुर्दश दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४४ पर समाप्त हुआ

पत्र ४५ से पंचदश दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४६ पर समाप्त हुआ

पत्र ४७ से षोडश दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४८ पर समाप्त हुआ

पत्र ४९ से सप्तदश दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५० पर समाप्त हुआ

पत्र ५१ से अष्टादश दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५२ पर समाप्त हुआ

पत्र ५३ से नवदश दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५४ पर समाप्त हुआ

पत्र ५५ से विंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५६ पर समाप्त हुआ

पत्र ५७ से एकविंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५८ पर समाप्त हुआ

पत्र ५९ से द्वाविंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ६० पर समाप्त हुआ

पत्र ६१ से त्रयोविंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ६२ पर समाप्त हुआ

पत्र ६३ से चतुर्विंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ६४ पर समाप्त हुआ

पत्र ६५ से पंचविंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ६६ पर समाप्त हुआ

पत्र ६७ से षड्विंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ६८ पर समाप्त हुआ

पत्र ६९ से सप्तविंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ७० पर समाप्त हुआ

पत्र ७१ से अष्टविंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ७२ पर समाप्त हुआ

पत्र ७३ से नवविंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ७४ पर समाप्त हुआ

पत्र ७५ से त्रिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ७६ पर समाप्त हुआ

पत्र ७७ से एकत्रिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ७८ पर समाप्त हुआ

पत्र ७९ से द्वात्रिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ८० पर समाप्त हुआ

पत्र ८१ से त्रयस्त्रिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ८२ पर समाप्त हुआ

पत्र ८३ से चतुस्त्रिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ८४ पर समाप्त हुआ

पत्र ८५ से पंचत्रिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ८६ पर समाप्त हुआ

पत्र ८७ से षट्त्रिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ८८ पर समाप्त हुआ

पत्र ८९ से सप्तत्रिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ९० पर समाप्त हुआ

पत्र ९१ से अष्टत्रिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ९२ पर समाप्त हुआ

पत्र ९३ से नवत्रिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ९४ पर समाप्त हुआ

पत्र ९५ से चत्वारिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ९६ पर समाप्त हुआ

पत्र ९७ से एकचत्वारिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ९८ पर समाप्त हुआ

पत्र ९९ से द्वाचत्वारिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १०० पर समाप्त हुआ

पत्र १०१ से त्रयश्चत्वारिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १०२ पर समाप्त हुआ

पत्र १०३ से चतुश्चत्वारिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १०४ पर समाप्त हुआ

पत्र १०५ से पंचचत्वारिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १०६ पर समाप्त हुआ

पत्र १०७ से षट्चत्वारिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १०८ पर समाप्त हुआ

पत्र १०९ से सप्तचत्वारिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ११० पर समाप्त हुआ

पत्र १११ से अष्टचत्वारिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ११२ पर समाप्त हुआ

पत्र ११३ से नवचत्वारिंशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ११४ पर समाप्त हुआ

पत्र ११५ से पंचाशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ११६ पर समाप्त हुआ

पत्र ११७ से एकपंचाशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ११८ पर समाप्त हुआ

पत्र ११९ से द्वापंचाशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १२० पर समाप्त हुआ

पत्र १२१ से त्रयःपंचाशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १२२ पर समाप्त हुआ

पत्र १२३ से चतुःपंचाशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १२४ पर समाप्त हुआ

पत्र १२५ से पंचपंचाशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १२६ पर समाप्त हुआ

पत्र १२७ से षट्पंचाशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १२८ पर समाप्त हुआ

पत्र १२९ से सप्तपंचाशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १३० पर समाप्त हुआ

पत्र १३१ से अष्टपंचाशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १३२ पर समाप्त हुआ

पत्र १३३ से नवपंचाशति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १३४ पर समाप्त हुआ

पत्र १३५ से षष्टि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १३६ पर समाप्त हुआ

पत्र १३७ से एकषष्टि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १३८ पर समाप्त हुआ

पत्र १३९ से द्वाषष्टि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १४० पर समाप्त हुआ

पत्र १४१ से त्रयःषष्टि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १४२ पर समाप्त हुआ

पत्र १४३ से चतुःषष्टि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १४४ पर समाप्त हुआ

पत्र १४५ से पंचषष्टि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १४६ पर समाप्त हुआ

पत्र १४७ से षट्षष्टि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १४८ पर समाप्त हुआ

पत्र १४९ से सप्तषष्टि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १५० पर समाप्त हुआ

पत्र १५१ से अष्टषष्टि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १५२ पर समाप्त हुआ

पत्र १५३ से नवषष्टि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १५४ पर समाप्त हुआ

पत्र १५५ से सप्तति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १५६ पर समाप्त हुआ

पत्र १५७ से एकसप्तति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १५८ पर समाप्त हुआ

पत्र १५९ से द्वासप्तति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १६० पर समाप्त हुआ

पत्र १६१ से त्रयःसप्तति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १६२ पर समाप्त हुआ

पत्र १६३ से चतुःसप्तति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १६४ पर समाप्त हुआ

पत्र १६५ से पंचसप्तति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १६६ पर समाप्त हुआ

पत्र १६७ से षट्सप्तति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १६८ पर समाप्त हुआ

पत्र १६९ से सप्तसप्तति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १७० पर समाप्त हुआ

पत्र १७१ से अष्टसप्तति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १७२ पर समाप्त हुआ

पत्र १७३ से नवसप्तति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १७४ पर समाप्त हुआ

पत्र १७५ से अशीति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १७६ पर समाप्त हुआ

पत्र १७७ से एकाशीति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १७८ पर समाप्त हुआ

पत्र १७९ से द्वाशीति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १८० पर समाप्त हुआ

पत्र १८१ से त्रयःशीति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १८२ पर समाप्त हुआ

पत्र १८३ से चतुःशीति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १८४ पर समाप्त हुआ

पत्र १८५ से पंचशीति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १८६ पर समाप्त हुआ

पत्र १८७ से षट्शीति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १८८ पर समाप्त हुआ

पत्र १८९ से सप्तशीति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १९० पर समाप्त हुआ

पत्र १९१ से अष्टशीति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १९२ पर समाप्त हुआ

पत्र १९३ से नवशीति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १९४ पर समाप्त हुआ

पत्र १९५ से नवति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १९६ पर समाप्त हुआ

पत्र १९७ से एकनवति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र १९८ पर समाप्त हुआ

पत्र १९९ से द्वानवति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २०० पर समाप्त हुआ

पत्र २०१ से त्रयःनवति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २०२ पर समाप्त हुआ

पत्र २०३ से चतुःनवति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २०४ पर समाप्त हुआ

पत्र २०५ से पंचनवति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २०६ पर समाप्त हुआ

पत्र २०७ से षट्नवति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २०८ पर समाप्त हुआ

पत्र २०९ से सप्तनवति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २१० पर समाप्त हुआ

पत्र २११ से अष्टनवति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २१२ पर समाप्त हुआ

पत्र २१३ से नवनवति दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २१४ पर समाप्त हुआ

पत्र २१५ से शत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २१६ पर समाप्त हुआ

पत्र २१७ से एकशत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २१८ पर समाप्त हुआ

पत्र २१९ से द्वाशत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २२० पर समाप्त हुआ

पत्र २२१ से त्रयःशत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २२२ पर समाप्त हुआ

पत्र २२३ से चतुःशत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २२४ पर समाप्त हुआ

पत्र २२५ से पंचशत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २२६ पर समाप्त हुआ

पत्र २२७ से षट्शत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २२८ पर समाप्त हुआ

पत्र २२९ से सप्तशत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २३० पर समाप्त हुआ

पत्र २३१ से अष्टशत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २३२ पर समाप्त हुआ

पत्र २३३ से नवशत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २३४ पर समाप्त हुआ

पत्र २३५ से सहस्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २३६ पर समाप्त हुआ

पत्र २३७ से एकसहस्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २३८ पर समाप्त हुआ

पत्र २३९ से द्वासहस्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २४० पर समाप्त हुआ

पत्र २४१ से त्रयःसहस्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २४२ पर समाप्त हुआ

पत्र २४३ से चतुःसहस्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २४४ पर समाप्त हुआ

पत्र २४५ से पंचसहस्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २४६ पर समाप्त हुआ

पत्र २४७ से षट्सहस्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २४८ पर समाप्त हुआ

पत्र २४९ से सप्तसहस्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २५० पर समाप्त हुआ

पत्र २५१ से अष्टसहस्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २५२ पर समाप्त हुआ

पत्र २५३ से नवसहस्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २५४ पर समाप्त हुआ

पत्र २५५ से अयुत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २५६ पर समाप्त हुआ

पत्र २५७ से एकायुत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २५८ पर समाप्त हुआ

पत्र २५९ से द्वायुत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २६० पर समाप्त हुआ

पत्र २६१ से त्रयःयुत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २६२ पर समाप्त हुआ

पत्र २६३ से चतुःयुत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २६४ पर समाप्त हुआ

पत्र २६५ से पंचयुत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २६६ पर समाप्त हुआ

पत्र २६७ से षट्युत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २६८ पर समाप्त हुआ

पत्र २६९ से सप्तयुत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २७० पर समाप्त हुआ

पत्र २७१ से अष्टयुत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २७२ पर समाप्त हुआ

पत्र २७३ से नवयुत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २७४ पर समाप्त हुआ

पत्र २७५ से लक्ष दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २७६ पर समाप्त हुआ

पत्र २७७ से एकलक्ष दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २७८ पर समाप्त हुआ

पत्र २७९ से द्वालक्ष दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २८० पर समाप्त हुआ

पत्र २८१ से त्रयःलक्ष दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २८२ पर समाप्त हुआ

पत्र २८३ से चतुःलक्ष दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २८४ पर समाप्त हुआ

पत्र २८५ से पंचलक्ष दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २८६ पर समाप्त हुआ

पत्र २८७ से षट्लक्ष दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २८८ पर समाप्त हुआ

पत्र २८९ से सप्तलक्ष दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २९० पर समाप्त हुआ

पत्र २९१ से अष्टलक्ष दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २९२ पर समाप्त हुआ

पत्र २९३ से नवलक्ष दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २९४ पर समाप्त हुआ

पत्र २९५ से कोटि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २९६ पर समाप्त हुआ

पत्र २९७ से एककोटि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र २९८ पर समाप्त हुआ

पत्र २९९ से द्वाकोटि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३०० पर समाप्त हुआ

पत्र ३०१ से त्रयःकोटि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३०२ पर समाप्त हुआ

पत्र ३०३ से चतुःकोटि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३०४ पर समाप्त हुआ

पत्र ३०५ से पंचकोटि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३०६ पर समाप्त हुआ

पत्र ३०७ से षट्कोटि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३०८ पर समाप्त हुआ

पत्र ३०९ से सप्तकोटि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३१० पर समाप्त हुआ

पत्र ३११ से अष्टकोटि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३१२ पर समाप्त हुआ

पत्र ३१३ से नवकोटि दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३१४ पर समाप्त हुआ

पत्र ३१५ से अर्बुद दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३१६ पर समाप्त हुआ

पत्र ३१७ से एकार्बुद दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३१८ पर समाप्त हुआ

पत्र ३१९ से द्वार्बुद दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३२० पर समाप्त हुआ

पत्र ३२१ से त्रयःअर्बुद दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३२२ पर समाप्त हुआ

पत्र ३२३ से चतुःअर्बुद दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३२४ पर समाप्त हुआ

पत्र ३२५ से पंचार्बुद दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३२६ पर समाप्त हुआ

पत्र ३२७ से षट्अर्बुद दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३२८ पर समाप्त हुआ

पत्र ३२९ से सप्तार्बुद दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३३० पर समाप्त हुआ

पत्र ३३१ से अष्टार्बुद दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३३२ पर समाप्त हुआ

पत्र ३३३ से नवार्बुद दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३३४ पर समाप्त हुआ

पत्र ३३५ से अंबुज दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३३६ पर समाप्त हुआ

पत्र ३३७ से एकांबुज दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३३८ पर समाप्त हुआ

पत्र ३३९ से द्वांबुज दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३४० पर समाप्त हुआ

पत्र ३४१ से त्रयःअंबुज दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३४२ पर समाप्त हुआ

पत्र ३४३ से चतुःअंबुज दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३४४ पर समाप्त हुआ

पत्र ३४५ से पंचांबुज दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३४६ पर समाप्त हुआ

पत्र ३४७ से षट्अंबुज दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३४८ पर समाप्त हुआ

पत्र ३४९ से सप्तांबुज दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३५० पर समाप्त हुआ

पत्र ३५१ से अष्टांबुज दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३५२ पर समाप्त हुआ

पत्र ३५३ से नवांबुज दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३५४ पर समाप्त हुआ

पत्र ३५५ से खर्व दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३५६ पर समाप्त हुआ

पत्र ३५७ से एकखर्व दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३५८ पर समाप्त हुआ

पत्र ३५९ से द्वाखर्व दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३६० पर समाप्त हुआ

पत्र ३६१ से त्रयःखर्व दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३६२ पर समाप्त हुआ

पत्र ३६३ से चतुःखर्व दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३६४ पर समाप्त हुआ

पत्र ३६५ से पंचखर्व दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३६६ पर समाप्त हुआ

पत्र ३६७ से षट्खर्व दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३६८ पर समाप्त हुआ

पत्र ३६९ से सप्तखर्व दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३७० पर समाप्त हुआ

पत्र ३७१ से अष्टखर्व दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३७२ पर समाप्त हुआ

पत्र ३७३ से नवखर्व दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३७४ पर समाप्त हुआ

पत्र ३७५ से महापद्म दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३७६ पर समाप्त हुआ

पत्र ३७७ से एकमहापद्म दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३७८ पर समाप्त हुआ

पत्र ३७९ से द्वामहापद्म दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३८० पर समाप्त हुआ

पत्र ३८१ से त्रयःमहापद्म दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३८२ पर समाप्त हुआ

पत्र ३८३ से चतुःमहापद्म दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३८४ पर समाप्त हुआ

पत्र ३८५ से पंचमहापद्म दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३८६ पर समाप्त हुआ

पत्र ३८७ से षट्महापद्म दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३८८ पर समाप्त हुआ

पत्र ३८९ से सप्तमहापद्म दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३९० पर समाप्त हुआ

पत्र ३९१ से अष्टमहापद्म दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३९२ पर समाप्त हुआ

पत्र ३९३ से नवमहापद्म दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३९४ पर समाप्त हुआ

पत्र ३९५ से शंकु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३९६ पर समाप्त हुआ

पत्र ३९७ से एकशंकु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ३९८ पर समाप्त हुआ

पत्र ३९९ से द्वाशंकु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४०० पर समाप्त हुआ

पत्र ४०१ से त्रयःशंकु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४०२ पर समाप्त हुआ

पत्र ४०३ से चतुःशंकु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४०४ पर समाप्त हुआ

पत्र ४०५ से पंचशंकु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४०६ पर समाप्त हुआ

पत्र ४०७ से षट्शंकु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४०८ पर समाप्त हुआ

पत्र ४०९ से सप्तशंकु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४१० पर समाप्त हुआ

पत्र ४११ से अष्टशंकु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४१२ पर समाप्त हुआ

पत्र ४१३ से नवशंकु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४१४ पर समाप्त हुआ

पत्र ४१५ से समुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४१६ पर समाप्त हुआ

पत्र ४१७ से एकसमुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४१८ पर समाप्त हुआ

पत्र ४१९ से द्वासमुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४२० पर समाप्त हुआ

पत्र ४२१ से त्रयःसमुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४२२ पर समाप्त हुआ

पत्र ४२३ से चतुःसमुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४२४ पर समाप्त हुआ

पत्र ४२५ से पंचसमुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४२६ पर समाप्त हुआ

पत्र ४२७ से षट्समुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४२८ पर समाप्त हुआ

पत्र ४२९ से सप्तसमुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४३० पर समाप्त हुआ

पत्र ४३१ से अष्टसमुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४३२ पर समाप्त हुआ

पत्र ४३३ से नवसमुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४३४ पर समाप्त हुआ

पत्र ४३५ से अंत्य दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४३६ पर समाप्त हुआ

पत्र ४३७ से एकांत्य दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४३८ पर समाप्त हुआ

पत्र ४३९ से द्वांत्य दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४४० पर समाप्त हुआ

पत्र ४४१ से त्रयःअंत्य दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४४२ पर समाप्त हुआ

पत्र ४४३ से चतुःअंत्य दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४४४ पर समाप्त हुआ

पत्र ४४५ से पंचांत्य दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४४६ पर समाप्त हुआ

पत्र ४४७ से षट्अंत्य दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४४८ पर समाप्त हुआ

पत्र ४४९ से सप्तांत्य दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४५० पर समाप्त हुआ

पत्र ४५१ से अष्टांत्य दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४५२ पर समाप्त हुआ

पत्र ४५३ से नवांत्य दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४५४ पर समाप्त हुआ

पत्र ४५५ से परार्ध दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४५६ पर समाप्त हुआ

पत्र ४५७ से एकपरार्ध दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४५८ पर समाप्त हुआ

पत्र ४५९ से द्वापरार्ध दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४६० पर समाप्त हुआ

पत्र ४६१ से त्रयःपरार्ध दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४६२ पर समाप्त हुआ

पत्र ४६३ से चतुःपरार्ध दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४६४ पर समाप्त हुआ

पत्र ४६५ से पंचपरार्ध दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४६६ पर समाप्त हुआ

पत्र ४६७ से षट्परार्ध दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४६८ पर समाप्त हुआ

पत्र ४६९ से सप्तपरार्ध दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४७० पर समाप्त हुआ

पत्र ४७१ से अष्टपरार्ध दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४७२ पर समाप्त हुआ

पत्र ४७३ से नवपरार्ध दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४७४ पर समाप्त हुआ

पत्र ४७५ से अनंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४७६ पर समाप्त हुआ

पत्र ४७७ से एकानंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४७८ पर समाप्त हुआ

पत्र ४७९ से द्वानंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४८० पर समाप्त हुआ

पत्र ४८१ से त्रयःअनंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४८२ पर समाप्त हुआ

पत्र ४८३ से चतुःअनंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४८४ पर समाप्त हुआ

पत्र ४८५ से पंचानंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४८६ पर समाप्त हुआ

पत्र ४८७ से षट्अनंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४८८ पर समाप्त हुआ

पत्र ४८९ से सप्तानंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४९० पर समाप्त हुआ

पत्र ४९१ से अष्टानंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४९२ पर समाप्त हुआ

पत्र ४९३ से नवानंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४९४ पर समाप्त हुआ

पत्र ४९५ से महाकल्प दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४९६ पर समाप्त हुआ

पत्र ४९७ से एकमहाकल्प दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ४९८ पर समाप्त हुआ

पत्र ४९९ से द्वामहाकल्प दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५०० पर समाप्त हुआ

पत्र ५०१ से त्रयःमहाकल्प दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५०२ पर समाप्त हुआ

पत्र ५०३ से चतुःमहाकल्प दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५०४ पर समाप्त हुआ

पत्र ५०५ से पंचमहाकल्प दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५०६ पर समाप्त हुआ

पत्र ५०७ से षट्महाकल्प दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५०८ पर समाप्त हुआ

पत्र ५०९ से सप्तमहाकल्प दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५१० पर समाप्त हुआ

पत्र ५११ से अष्टमहाकल्प दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५१२ पर समाप्त हुआ

पत्र ५१३ से नवमहाकल्प दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५१४ पर समाप्त हुआ

पत्र ५१५ से ब्रह्मा दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५१६ पर समाप्त हुआ

पत्र ५१७ से एकब्रह्मा दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५१८ पर समाप्त हुआ

पत्र ५१९ से द्वाब्रह्मा दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५२० पर समाप्त हुआ

पत्र ५२१ से त्रयःब्रह्मा दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५२२ पर समाप्त हुआ

पत्र ५२३ से चतुःब्रह्मा दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५२४ पर समाप्त हुआ

पत्र ५२५ से पंचब्रह्मा दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५२६ पर समाप्त हुआ

पत्र ५२७ से षट्ब्रह्मा दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५२८ पर समाप्त हुआ

पत्र ५२९ से सप्तब्रह्मा दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५३० पर समाप्त हुआ

पत्र ५३१ से अष्टब्रह्मा दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५३२ पर समाप्त हुआ

पत्र ५३३ से नवब्रह्मा दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५३४ पर समाप्त हुआ

पत्र ५३५ से विष्णु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५३६ पर समाप्त हुआ

पत्र ५३७ से एकविष्णु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५३८ पर समाप्त हुआ

पत्र ५३९ से द्वाविष्णु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५४० पर समाप्त हुआ

पत्र ५४१ से त्रयःविष्णु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५४२ पर समाप्त हुआ

पत्र ५४३ से चतुःविष्णु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५४४ पर समाप्त हुआ

पत्र ५४५ से पंचविष्णु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५४६ पर समाप्त हुआ

पत्र ५४७ से षट्विष्णु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५४८ पर समाप्त हुआ

पत्र ५४९ से सप्तविष्णु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५५० पर समाप्त हुआ

पत्र ५५१ से अष्टविष्णु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५५२ पर समाप्त हुआ

पत्र ५५३ से नवविष्णु दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५५४ पर समाप्त हुआ

पत्र ५५५ से रुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५५६ पर समाप्त हुआ

पत्र ५५७ से एकरुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५५८ पर समाप्त हुआ

पत्र ५५९ से द्वारुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५६० पर समाप्त हुआ

पत्र ५६१ से त्रयःरुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५६२ पर समाप्त हुआ

पत्र ५६३ से चतुःरुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५६४ पर समाप्त हुआ

पत्र ५६५ से पंचरुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५६६ पर समाप्त हुआ

पत्र ५६७ से षट्रुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५६८ पर समाप्त हुआ

पत्र ५६९ से सप्तरुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५७० पर समाप्त हुआ

पत्र ५७१ से अष्टरुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५७२ पर समाप्त हुआ

पत्र ५७३ से नवरुद्र दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५७४ पर समाप्त हुआ

पत्र ५७५ से अंतक दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५७६ पर समाप्त हुआ

पत्र ५७७ से एकांतक दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५७८ पर समाप्त हुआ

पत्र ५७९ से द्वांतक दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५८० पर समाप्त हुआ

पत्र ५८१ से त्रयःअंतक दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५८२ पर समाप्त हुआ

पत्र ५८३ से चतुःअंतक दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५८४ पर समाप्त हुआ

पत्र ५८५ से पंचांतक दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५८६ पर समाप्त हुआ

पत्र ५८७ से षट्अंतक दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५८८ पर समाप्त हुआ

पत्र ५८९ से सप्तांतक दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५९० पर समाप्त हुआ

पत्र ५९१ से अष्टांतक दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५९२ पर समाप्त हुआ

पत्र ५९३ से नवांतक दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५९४ पर समाप्त हुआ

पत्र ५९५ से अनंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५९६ पर समाप्त हुआ

पत्र ५९७ से एकानंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ५९८ पर समाप्त हुआ

पत्र ५९९ से द्वानंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ६०० पर समाप्त हुआ

पत्र ६०१ से त्रयःअनंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ६०२ पर समाप्त हुआ

पत्र ६०३ से चतुःअनंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ६०४ पर समाप्त हुआ

पत्र ६०५ से पंचानंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ६०६ पर समाप्त हुआ

पत्र ६०७ से षट्अनंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ६०८ पर समाप्त हुआ

पत्र ६०९ से सप्तानंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ६१० पर समाप्त हुआ

पत्र ६११ से अष्टानंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ६१२ पर समाप्त हुआ

पत्र ६१३ से नवानंत दिन कृत्य प्रारंभ पत्र ६१४ पर समाप्त हुआ

पत्र ६१५ से महाकल्प दिन कृत्य प्रारं

श्रीमते रामानुजाय नमः वागीशाद्यस्य वदने लक्ष्मीर्यस्य च वक्षसि यस्यास्ते हृदये
संवित् श्रीनृसिंहमहं भजे १ स्वकृपाहृपातेन तद्विपक्षविदारणम् श्रीनृसिं
हमहं वंदे परमानंदविग्रहं २ अथातो भगवत्प्रतिष्ठां व्याख्यास्यामः अत्र विव
निर्णीतशालिग्रामशिलायां च कर्तव्यं विग्रहं हरेः पुण्ये तीर्थे शुभे क्षेत्रे पुण्ये प
र्वे तमसके स्निग्धं ब्रह्मनू गृहीत्वा स्मकारयेत् शुभविग्रहं सर्वविग्रहसं
पूर्णविलक्षणैश्च विराजितं श्रीभूमिसहितं देवं कारयेच्छुभविग्रहं समीचीनदेशाउत्प
न्न एव विग्रहः कर्तव्यं कृष्णसारवरे देशे उत्पन्नं शुभाकृतिः वैष्णवस्य गृहस्थस्य
सेवा श्रावस्य की भवेत् यथासंभवं सुवर्णरजतताम्रादिभिः शिल्पशास्त्रोक्तप्रकारेण क
र्तव्यः अथ कालनिर्णयः ग्रहणे शुभ्यमासे तु विशुद्धे रविजीवयोः दुर्लग्नदुर्मुहूर्ते तथा
कंपोल्कानिपातने हरेस्तत्र न कर्तव्या प्रतिष्ठा द्विजसत्तमैः माघाद्विपंचमासाः तथा
मास्ये चैत्रे फाल्गुने वापि ज्येष्ठे वा माधवे तथा माघे च विष्णुविंवानां प्रतिष्ठा शुभदा

लोहारसमायुतं रक्तपीतादिनानाचित्रैर्विचित्रानादिकं तथा संभवं कारयेत् जलाधिवा।
सार्थं उत्तरमंडये चतुस्तंभमध्ये चतुरश्रांवदिकां कुर्यात् चतुर्घटं स्थापयित्वा शुभज
लपूर्यित्वापं चरत्नं स्थापयित्वा पट्टवस्त्रं स्थापयित्वा पूर्वे चतुरश्रं कुंडं दक्षि
णेधनुराकृतिं पश्चिमे चर्तुलाकारं उत्तरे चत्रिकोणकं मेखलाभिस्त्रिभिर्यु
क्तं सर्वं कुर्वीत बुद्धिमान् विस्तारायामनिर्मे अहस्तमात्रं मेखलं द्वादशाष्टच
तुर्भिर्मे अंगुलैश्च प्रकल्प्य पत्तकुंडस्य पश्चिमे भागे यानि कुर्यात् सलक्षणं प्रश्वस्य
पत्र सदृशं कुंडे किंचप्रतिष्ठितां षट चतुस्त्र्यंगुलासापिभवेन्निम्नाक्रमाद्विजाः विस्तारे
णापिसायानिर्भवेत्पंचदशांगुला मूलनालं तथाग्रं च व्यक्रमात् षचतुस्त्रिक
तन्मानांगुलमानं स्यात्तदे कुंडलक्षणं एकहस्तस्य कुंडस्य प्रमाणेयं प्रकाशितः एक
हस्तमितं कुंडं एकहस्तं विधीयते लक्षणं दशकं यावत्तावद्धस्तेन वर्द्धयेत् कुंडा
नां यांशं रूपं मेखलानां च तादृशं कुंडानां मेखलानि [illegible] स [illegible] दिगुणं रूप

भवेत् नारदपंचरात्रे चैत्रमासे गुरौ शुक्रे वासरे शुभमुहूर्त्ते श्रावणे कार्त्तिके चैव मासे फा
ल्गुन संज्ञके प्राप्य पक्षे शुभं शुक्लं प्रतीते चोत्तरायणे पंचमी वह्नितीया च तृ
तीया चैव सप्तमी तथा दशमी पौर्णमासी च तथा ज्येष्ठा त्रयोदशी आषाढे द्वे तथा मूल
मुत्तरात्रयमेव च ज्येष्ठा श्रवणे रोहिण्यः पूर्वाभाद्रपदस्तथा हस्ताश्विनी रेवती
च पुष्यो मृगशिरस्तथा अनुराधा तथा स्वातिः प्रतिष्ठादिषु शस्यते बुधो बृहस्प
तिः शुक्रः त्रयणे शुभा वाहाः धनुर्मकरौ विहाय सर्वे लग्नाः शुभा वाहाः आ
चार्यः शुभे मुहूर्त्ते यजमानस्य राज्ञः राज्यस्य च अनुकूले देवस्य पति
ष्ठामारभेत् आचार्य्यः ब्राह्मणैः सहस्त्रवाद्यादिपूर्वकं बिंबनिर्माणकर्त्तारं
यथाशास्त्रोक्तौषधिलाविं वयजमानहस्तेन ग्राहयेत् भगवन् मंदिरादुत्तर
कोणे षोडशस्तंभसंख्यां कं चतुरस्रद्वयं कर्त्तव्यं प्राकारमंडपयुतं चतुर्द्वारस
मन्वितं चतुर्भिस्तोरणैर्युक्तं पताकाध्वजशोभितं मणित्रितखंभ कद

३ रस्य प्रतिष्ठा कर्म निर्विघ्न परिसमाप्तिर्भूयादिति भवंतो महांतो नु गृह्णंतु अथ यजमान आचा
र्य्यं वरयेत् अत्र आचार्य्य लक्षणं महाभागवतं चैव आचार्य्यं वरयेत्सुधीः
महाभागवताएव प्रयोज्या ऋजासप्ता पादि पंचसंस्कारा महाभागवता स्मृताः ऋ
त्विजान् वरयेत्तत्र वेदवान् ब्राह्मणान् शुभान् तादृक्गुणसमायुक्तं आचार्य्यं वरये
त्तत शंखचक्रोर्द्ध पुंड्रादिचिह्नैश्च रहितैर्द्विजैः तत्तु यत्कर्म कुर्वीत तत्महानिष्टं भ
वेत् चक्रादिचिह्नहीनेन स्थापिते यत्र विग्रहे न सान्निध्यं हरिर्न्यत्तिक्रियाकोटिशते
रपि अवैष्णवस्थापितानां प्रतिमान च वंदनं यः करोति स मूढात्मा रौरवं नरकं
व्रजेत् तस्मात्तु वैष्णवा देवा नियोज्या यज्ञकर्मणि एतादृक्लक्षणं युक्तं आचार्य्यं
तु नियोजयेत् अस्मिन्कर्मणि आचार्य्यं वृणीमहे आचार्य्यस्य गंधपुष्पधूपदीप
भूषणादिसकलाराधनोत्वार्चितं तदनंतरं ऋत्विजान् वरयेत् तद्यथा अस्मिन्र ३

तः मुष्टिमात्रेतुनाप्रोक्ता उत्सेधायामतः समा एकांगुलंतु योन्यग्रं कूर्यादीशनं
अधोमुखं एकैकांगुलितो योनिं कुंडेषु न्यसुवर्द्धयेत् स्थलादारभ्य नालंस्यो
द्योनीमध्ये सरंध्रकं नार्पयेत्कोणकुंडेषु योनीहोमपरायणः कुंडानां कल्पये ॥
मध्ये नाभिं सबुजसन्निभां तत्तत्कुंडानुरूपा यामानस्थनिगद्यते एवं प्रतिष्ठा
र्थं कल्पितं मंडपद्वयं अंतरबहिश्च शोधयित्वा गोमयोदकेसंयोध्य रंगवल्यादिभि
रलंकृत्य दर्भपुंजैः पर्यग्निकरणं कृत्वा पुण्याहं वाचयित्वा तदित्थं आचार्यब्राह्म
णैः सरस्ववाद्यघोषपूर्वकं तांडुलफलपुष्पादिदक्षिणापूर्वकं यजमानमुखेन ॥
अनुज्ञां कारयेत् नमः सहसेन समसर्वपापरूपासत्वां सर्वेभ्यो श्रीवैष्णवेभ्यो ना
मः अशेषहेतुविंयत्पवनसादरलेपयासमर्पितां इमां सोवर्णीप यत्किंचिद्दक्षि
णां यथोक्तदक्षिणामिव स्वीकृत्य अस्मभगवतः श्रीमन्नीलासमेतस्य समस्तपरिवा

द्वीपदिग्गजोपरिप्रनिष्टेलवणाक्षु सुरासर्पिक्षीरदधि महार्णवपरिमित्ते जंबूप्ल
क्षकुशक्रौंचशाकिशाल्मलीपुष्करसप्तद्वीपविरचिते विंध्यमेरुहिमगंधमादन॥
माल्यवर्षत्तप्रहृते बदरीकाश्रमनेमिषकुरुक्षेत्रपुष्करायोध्याद्वारकाश्रीरंग॥
विंकटाद्रि यादवाद्रि वानाद्रि श्रीपुरुषोत्तमादिपुण्यक्षेत्रसंकुले गंगायमुनागो
दावरीसिंधुकावेरीताम्रपर्ण्यादिपुण्यनाडिनीसमन्विते अंग वंग कलिंग का॥
श्मीरकांभोजसौत्रसौवीरसौराष्ट्रमागध मालवनेपाल चोल पांचाल वंगाल
सिंघाल द्राविड करणाटक नाटक रहट महाट पांडीर कुलीद्रद शाल्व गांधार
वर्वर वैदेह वाल्मीक कैकय कौशल कुंतल किरात सूरसेन टंकण कोरण
मत्स्यसैंधव शाल्व वेद्य सोम्याद्यशेषदेशभाषायुक्ते अमरावतीशोकावंतीभो
गवंतीकांच्यवंतीसिंधुवती अलकावती यशावती भोगवंतीप्रांतीहिते अतल

भगवत्प्रतिष्ठादिनारूपकर्मणि ऋग्यजुः सामाथर्वणेतिहासपुराणपठनार्थं ऋ
त्विजं वृणीमहे यजुर्वेदपठनार्थं ऋत्विजं चंडस्वर्विणं त्वां वृणीमहे इत्यादि अथसंक
ल्पः प्रतिष्ठादिनाजन्मूर्वं पंचमदिने तृतीयदिने वा अंकुरार्पणं कुर्यात् पश्चाद्दिरद्व
क्राद्यामहास्त्रैपलक्ष्मीनाथपरंपरां इति प्रार्थ्य पवित्रपाणिः प्राणायाम्य ॐ अस्य
श्रीमन्नारायणस्यानंतगरुडविष्वक्सेनाद्यनित्यसूरिभिः समेतस्य परांकुश
परकालयतिवरादिभक्तानुप्रणीतस्य महाजलकमलमध्योपरिभ्राम्यमा
णानंतानेककोटिसूर्यप्रभासमेतस्य श्रीभूमिनीलाकुचकलसविन्यस्त॥
कुंकुमांकितवक्षस्थलस्य शेषपर्यंकशायिनः शंखचक्रगदाशार्ङ्गपद्म
हस्तविराजितस्य सौशील्यवात्सल्यादिगुणयुक्तस्य श्रीमन्नारायणस्य आज्ञयाक
ल्पितानेककोटिब्रह्मांडहिरण्यमयादिपंचभूतविरचिते आधारकर्मानंता

तदङ्गत्वेन तान्विधायोपचारैरहं पूजयिष्ये

ण भगवत्प्रतिष्ठाम हं करिष्ये इति संकल्प्य श्रीदेवि विष्वक्सेनपूजां करिष्ये ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॐ
भूमिशांतिश्चास्मिन्वि श्वशांतिश्च सर्वकार्य शांति यजमानसिद्ध्यर्थं तदंगत्वेन स्वस्तिपु
ण्याहवाचनं करिष्ये पुण्याहं चतुरो ब्राह्मणान् भोजयिष्ये ॐ नमः समाधीयतां समाहितमन
सस्मः प्रसीदंतु भगवंतः प्रसन्नास्मः ॐ भगवद्भिरनुज्ञातः पुण्याहं वाचयिष्ये ॐ वाच्यतां भगव॥
त्प्रतिष्ठाकर्मणि ऋध्यतां॥ पुण्याहं भवंतो ब्रुवंतु भगवत्प्रतिष्ठापुण्याहकर्मणि स्तु भग
वत्प्रतिष्ठाकर्मणः स्वस्ति भवंतो ब्रुवंतु भगवत्प्रतिष्ठाकर्मणः ऋद्धिं भवंतो ब्रुवंतु भग
वत्प्रतिष्ठाकर्म ऋध्यतां ऋद्धिसमृद्धिः पुण्याहं समृद्धिरस्तु शुभं कर्मास्तु प्रजापतिः
प्रीयतां भगवान् प्रजापतिः शांतिरस्तु पुष्टिरस्तु अविघ्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु
शुद्धिरस्तु द्रव्यशुद्धिस्तु बिंबशुद्धिरस्तु मंडपशुद्धिरस्तु सर्वोपकरणशुद्धिरस्तु गो
ब्राह्मणेभ्यः शुभं भवंतु धनधान्यसमृद्धिरस्तु उत्तरे कर्मण्यविघ्नमरिष्टनिरसनम
स्तु यत्पापं तत्प्रतिहतं हतमस्तु सर्वसोभनमस्तु सर्वाः संपदः संतु शुभानि च

वितलसुतलरसातलतलातलमहातलतलातलानामुपरिभागेभूर्लोकभूर्लोक॥
स्वर्लोकमहर्लोकजनलोकतपोलोकसत्यलोकानांधोभागे तस्यांनखंडमध्ये प्रद्य
म्नाद्वीनीयेपरार्द्धेश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वंतरे कलियुगे प्रथम
पादे जंबूद्वीपे भारतवर्षे भारतखंडे श्रमुकसंवत्सरे उत्तरायणे वसंत
ऋतौ चैत्रमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ भृगुवासरे श्रवणनक्षत्रे विष्णु
योगे विष्णुकरणे एवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ श्रीभगवदाज्ञ
या भगवत्प्रीत्यर्थं श्रस्य यजमानस्य क्षेमस्थैर्यं आयुरारोग्यैश्वर्यादि ह
या भगवत्प्रीत्यर्थं श्रस्य यजमानस्य दुर्भिक्षनिव
त्त्यर्थं भगवद्भागवताचार्यकैंकर्यसिद्ध्यर्थं श्रस्य यजमानस्य दुर्भिक्षनिव
र्त्तयर्थं तत्तत्कालसंभावितसस्यानि वृद्ध्यर्थं श्रस्मिन्ग्रामे सर्वेषां ब्राह्मणक्ष
त्रियवैश्यशूद्राणां क्षेमसिद्ध्यर्थं श्रीमन्नारायणस्य पंचयात्रोक्तप्राकारे

एतासां पालिका नाम ध्येकलसं स्थापयेत् तस्मिन् सुगंधजलं पूरयित्वा पंचरत्नपंच
पल्लवतुलसीदलं च निक्षिप्य तस्मिन् ब्रह्माणं मा ब्रह्म ॐ भूः ब्रह्माणं मा वाहयामि
ॐ भुवः वज्रिणं मा वाहयामि ॐ स्वः शचिपतिं मा वाहयामि ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तऋषयो मा
वाहयामि इंद्रादीनामिदमासनं ॐ भूः अग्निं मध्ये चतुर्मुखं विद्यात् पूर्वे वज्रि।
णमेव च दक्षिणे यमं विद्यात् पश्चिमे वरुणं तथा उत्तरे एशानं विद्यात् पालिकास्था
पनं क्रमात् शेषपालिकादिषु ॐ भूः अग्निं मा वाहयामि ॐ भुवः वह्निं मा वाहयामि॥
ॐ स्वः पावकं मा वाहयामि ॐ भूर्भुवः स्वः विति होत्रं मा वाहयामि अग्न्यादिभ्यो नमः।
अग्न्यादीनामिदमासनं ॐ भूः यमं मा वाहयामि ॐ भुवः देवस्वतं मा वाहयामि
ॐ स्वः पितृपतिं मा वाहयामि ॐ भूर्भुवः स्वः धर्मराजं मा वाहयामि यमादिभ्यो न
मः यमादिभ्यो इदमासनं ॐ भूः नैऋतिं मा वाहयामि ॐ भुवः यातुधानं मा वाहयामि
ॐ स्वः नक्तंचरं मा वाहयामि ॐ भूर्भुवः स्वः पुण्यजनं मा वाहयामि नैऋतिभ्यो नमः

ॐ तां ॐ शांतिः शांतिः शांतिः अस्मिन् कुंभे वरुणमावाहयामि इमं मे वरुण पुत्रमो॥
विश्वावाद्य वरुणस्य उदमासनं गंधपुष्पादिषोडशोपचारैः नैवेद्यदक्षिणांतांबूलसकला
राधनैः स्वार्चितं ॐ दधिक्राव्णो हिरण्यवर्णाश्च यः पवमानस्वजनः सेनानुहिपदे
शं चतुष्पदे ॐ शांतिः शांतिः शांतिः पुण्याहं जलेन सर्वे प्रोक्षणाक्षोभ्यतिरित्यनेन अथा
तोऽकुरार्पणविधिं व्याख्यास्यामः पुण्याहं स्वस्तिवाचयित्वा शुद्धे शोभने पालि
ग्रो चर्मपात्रे चतुरस्रं स्थंडिलं कृत्वा पालिस्थ अष्टौ पूर्वोक्त अपः स्पृश्य स्थंडिल
स्य मध्ये प्राग्दग्ग्रान् दर्भान् संस्तीर्य तेषु उपरि पालिकान् स्वर्णरजतकांस्यमृण्म
यं वा यथासंभवं कारयेत् स्नाति गोमयोदकैः पालिकान् प्रक्षाल्य विस्रुगाय आपुन्या
ह जलेप्रोक्षदुर्वामश्वत्थपत्रं वटीरसंविल्वपत्रकं तासां मूले तु वध्नीयात् स्वे।
तसूत्रेण वेष्टयेद्दुर्वास्वत्थपल्लवनिर्मिते तोरणैः कंठेषु संबध्य कुशकासादिक॥
आकरति काहृत्वा ॐ मयं च तथैव च स्नानं प्रक्षिपेत्तासु पालिकासु यथाक्रमं।

पिलानिक्षिपेत्तत्तदिश्यमित्यदिशांदिशांकृत्वा सहारेनिक्षिप्यौषधे पतिन्नमस्या॥
मि सर्वकामफलप्रदं कुर्वंतु सफलं जन्म कुर्वंतु सफलश्रमं याजा ता औषध
यो शतधामानि सहस्रधामानि सहस्रमुत्तवारहे अयाराजन्नुत्तयमि
मे अगतिं कृणुथा वति पुरुषवतीः फलिनीरफला उत्तअश्वा इव सचित्तर्वीरुधः
पारइत्सवः औषधीरिव मातरः तन्नोदेवी रूपवुवे रथाथं सिविघ्नतीरितिरयः
चातयमानाः अश्वत्थेविनिषदनंपर्णेवोव सीताः गोभाज इत्कीलासपयस्वा
नवयमरुषंपदं नाजयंमि मा औधाहस्त अदधे आत्माद्यक्ष्मस्य नश्यति पुरा
जीवाग्रभोयथायदोषधयः संगछंतेराजानः समितामिव विप्रः स उच्यतेभिष
ग्रहेद्वो हामीवचातनः निष्कृति र्नमवोमाता थायुयथं स्य संकृतिं मराः यत्त
त्रिणिस्थनयदामपत्तिनिकृता अन्याबोअन्याश्चवत्न्यान्यस्या उमावत्तवा औष
धयसोमराज्ञिप्रविप्रयमवोमनुतासामः स्युत्तमार्पणजीवात्तवे सव अवपत्तं ती

नि इदमासनं ॐ भूः वरुणमावाहयामि ॐ भुवः प्रचेतसमावाहयामि ॐ स्वः स्वरूपिणमा-
वाहयामि ॐ भूर्भुवः स्वः आपांपतिमावाहयामि वरुणादिभ्यो नमः इदमासनं ॐ भूः
वायुमावाहयामि ॐ भुवः पवनमावाहयामि ॐ स्वः मारुतमावाहयामि ॐ भूर्भुवः
स्वः समीरणमावाहयामि वायवादिभ्यो नमः इदमासनं ॐ भूः सोममावाहयामि ॥
ॐ भुवः इंदुमावाहयामि ॐ भूर्भुवः स्वः ओषधिपतिमावाहयामि सोमादिभ्यो
नमः इदमासनं ॐ भूः ईशानमावाहयामि ॐ भुवः त्रिलिनमावाहयामि ॐ
स्वः उमापतिमावाहयामि ॐ भूर्भुवः स्वः पिनाकिनमावाहयामि ॐ स्वः ईशा-
न्यादिभ्यो नमः इदमासनं ब्रह्मेंद्र अग्नि यम नैऋत्य वरुण वायु सोम ईशान्यादिभ्यो
नमः इदमर्घ्यमिदमाचमनीयं इदं पाद्यमिदमाचमनीयं इदं वस्त्रं इदमाचमनी-
यं एते धूपदीप गंधाक्षतनैवेद्यांतांबूलादि षोडशोपचारा व्रीहियवमाषति
लशुंठ सर्षप गोधूम चरणकानूमि श्रीकृत्य हारे निक्षिप्य ओषधिसूक्तेन ॥

स्य स्थंडिलस्य मध्ये प्राग्ग्रदिदर्भान् संस्तीर्य तेषु उपरि कुंभं निधाय व्याहृतिभिः
शुद्धोदकैः पूरयित्वा कुंभं मंत्रैर्निधाय पंचरत्नानि निक्षिप्य नववस्त्रयुग्मेनावेष्ट्य अस्मिन् कुं
भे वरुणमावाह्य सर्वौषधीः पंचरत्नं कांपित्वा तंडुलपात्रं तांबूलं हरिद्राचूर्णैः सहिते चतुर्गु
णसूत्रं विन्यस्य चतुर्दिक्षु चतुरः ब्राह्मणान् याजयेत् अस्मिन् प्रतिसरबंधकर्मणि पूर्व
स्यां दिशि जपकर्तारं त्वा वरुणमहं एवं सर्वत्र अपजपक्रमः गायत्री सावित्री आपोहिष्ठा
हिरण्यवर्णाः विष्णोर्नुकं कृणुष्व भाजः एतैः इंद्रा स्वस्तिदा मह्यं इंद्रश्रीसूक्तं रुद्रसूक्तं आपु
सूक्तं जपित्वा अनेन अन्नेन प्रतिसरं बध्वा ब्राह्मणैर्ज्यभारेति ब्रह्मसूक्तेन प्रतिसरं प्रोक्ष्य
हरिद्राचूर्णेन एतत्सूक्तेन अवक इति मंत्रेण त्रिवारं संगृह्य विष्णोर्नुकं रहस्यानां इति रहस्यं
कुर्यात् तिलाक्षतैः ध्यात्वा आचार्यादि यजमानं सर्वेषां ऋत्विजानां दक्षिणहस्ते रहस्यं कुर्या
त् अनंतरं बिंबपूजाद्रव्यपात्राणि गंगामृत्तिकादिभिः गोमयभस्मतिलैः सहिताभिः द्वा
त्रिंशद्वारं भगवन्नामस्मरणपूर्वकं शुद्धिं कारयेत् अनंतरं प्रानीय चतुरस्रं त्रिकोण

बिंबपूजा नामपूर्वपूजारं

खदन्नदिव ओषधयः पत्नीवन्तश्च वा महे नसंरिष्यति पुरुषः ओषधयः संवदन्ते सोमेन सह
राज्ञा यस्मै करोति ब्राह्मणः स्वराज्यं पारयामसि इति ओषधीसूक्तं जपित्वा सुमंगलीहस्तेन
वीजावापनं कारयेत् पयसा यथा कुंभं सेचयेत् प्रणवेन तत्र हैव तामेव सविधानं।
कुर्यात् त्रातारमिंद्रं त्वं नो अग्रं सुगैः पंथा अस्मन्वन्ते नवायामि अनोनी पुद्भिः वयं सोमत।
मीशानं यात्कर्म तावत्सुरक्षितं गोपायेत् क्षनं गत्वा च कन्या च गर्भिणी रोहिणी तथा वंध्या।
चैव प्रसूती च वर्जयेदं कुरार्पणे आसन्नमा प्रजाकामा आषष्ठ्यां पुत्रनाशनं पंचमे भ
क्ति कामानां विशो सर्वान्स नक्षत्रा चतुर्थे वांकुरं विद्यात् पापी याज्ञायेत् सः तृतीये
सर्वकामानां द्वितीये सर्वशनं सर्वांकुरार्पणं कुर्यादित्याह भगवान् बौधायनः सर्वा
दि चतुर्द्वारेषु दिक्पतयः पूज्या सर्वे देवा समंततः प्रपातो प्रतिसरबंधं व्याख्यास्यामः
यस्मिन्दिने नंदीमुखं कुर्यात् तस्यां रात्र्यां प्रदोषांते प्रतिसरमारभेत् शुचौ समे देशे गो
मयेन गोचर्ममात्रं चतुरस्रं स्थंडिलं वालिप्य शर्करा रप्यु हस्तकलं निरस्य अपउप॥

पत्रवापनं का रयेदिति

ना

कृ

दि

Acc-124

दार्यमहातं चैव कुशाग्रं तिलमेव च एवं गंधं फलं पुष्पं अर्घं द्रव्यादि निक्षिपेत् पाद्यं दूर्वा
विल्वपत्रीकं श्यामाकं पल्लमेव च एलालवंगं कंकोलं जातीफलं मनीयकं कुंकुमं
मजिष्ठं हरिद्रा हेमुरा शैलेयपर्वकाबचा कचोलं मंत्रास्नानीयं औषधीस्नानं
एवं अर्घादिपात्रं तुलसीदलं निक्षिप्य मूलमंत्रेणाभिमंत्र्य सुदर्शनमंत्रेण रक्षा
कारयित्वा मधुपिन्याकेन नेत्रं पिधाय देवादिनामपि अर्घादीनुपचारयन् कृत्वा
धूपकं निवेद्य मंडपस्याग्नेयभागे स्वगृह्योक्तप्रकारेण अग्निं प्रतिष्ठाप्य तादिष्टं विव
स्यमानो यमानादिवैपरीत्यपरिहारार्थं शांतिहोमं करिष्ये इति संकल्प्य अग्निं परि
स्तीर्य अलंकृत्य गर्भाधानपुंसवनसीमंतोन्नयनं जातकर्मनामकरणान्नप्राश
नं चौलोपनयनवेदव्रतस्नातकविवाहास्यसंस्कारसिद्ध्यर्थं तिलैराज्यैश्च अष्टोत्तरस
तं वासुदेवद्वादशाक्षरेण जुहुयात् चरुहोमः कार्यः तत्र शांतिहोमं शमीपल्लवस
हितैरक्षतैरष्टोत्तरशतं सप्तव्याहृतिभिः जुहुयात् पुरुषसूक्तेन जुहुयात् चरुः॥

शान् स्थापयेच्छ्रमान् पूरयित्वा शुभजलैः पंचरत्नविमिश्रितैः कुशदूर्वाक्षतितिला
न् चंदनं गोरससर्षपान् हिरण्यं तुलसीपत्रं कलसेषु विनिक्षिपेत् तेषु सोदर्शनं मु।
द्रां दर्शयेत् मंत्रसंयुतां मंत्रेणैवाभिमंत्र्य प्रत्येकसप्तसंख्यया आपोहिष्ठा हिरण्यवर्णा य
वमान वैश्रवसूक्तं जपित्वा विंवंश्रियासहितं पीठेन चैव स्नानं नवस्त्रेण सदर्भेण सं
वेष्ट्य पंचगव्यैः स्नापयित्वा तत्प्रकारः गायत्र्या चैव गोमूत्रं गंधद्वारेति गोमयं आप्या
यस्वेति पयसा दधिक्राव्णेति वै दधिः शुक्रं समो त्वा जपेद्देवस्य त्वा कुशोदकं।
इति मंत्रं कृत्वा प्रणवेनाभिमंत्र्य भगवंतं अभिषेचयेत् अनंतरं पंचामृतैः स्ना
पयेत् अनंतरं चतुः कलशजलेन वैश्रवसूक्तेन स्नापयेत् अनंतरं नवस्त्रेण शी।
राद्रिशं वेष्टनं कृत्वा पुण्याहं वाचयित्वा पुण्याहजलेन भगवंतं प्रोक्षयेत् ततः प्रज्व
लितान् दीपान् स्थापयित्वा प्रोक्षितपादिकाणेषु द्वादशपात्राणि निक्षिप्य म
ध्ये शुद्धोदकपात्रं स्थापयित्वा उदकं पूरयित्वा औषधिद्रव्यं निक्षिप्य सि

उपवीतोत्तरीयादि समंत्रं सर्वकं भूषणादिभिरलंकृत्य यानमारोप्य विधिना संचारयित्वा पंचसूक्तं प्रारायणानुवा।
कादिपठनोज्जलाधिवासस्थानमानीय तत्र जलाधिवासार्थं कल्पितं कुंभं अंतपारश्चातरक्षादिभिरलंकृत्य क
दलीसंभान् आरोप्य गंधोदकैः शुद्धैः पूरयित्वा सर्वौषधिनिक्षिप्य कूर्चे हरिं ध्यात्वा संहारकर्मस्मृत्वा चक्रा
मुद्रां प्रदर्श्य पूर्वादि चतुर्दिक्षु कुंभान् धार्य परिस्थापित्वा नववस्त्रेण संवेष्ट्य कर्कं चतस्थापयित्वा कुंभे
षु ब्राह्मणं कर्कं सुदर्शनं तत्र मंत्रेण संपूज्य इंद्रादि अष्टदिक्षु वस्त्रवेष्टितेषु जलपूरितेषु कुंभेषु पूर्ववत् संपलंकृत्य
पूजयेत् ततः भगवंतं तस्मिन् जलाशये स्थाप्य नववस्त्रेण अच्छिद्रं आच्छाद्य जपेत् मंत्रं सूक्तं पवमानं तथैव
च अर्चयेद्विधिवत् तस्मिन् गंधपुष्पादिभिस्ततः नीराजनमपि कारयेत् सर्वत्र दीपान् सर्वं वद्धयित्वा मंग
लद्रव्यं परितः अवकीर्य रक्षोहण इति मंत्रेण च क्रमंत्रेण रक्षां कारयित्वा अनंतरं प्राणायाम्य संकल्पः
अस्मिन् भगवत्प्रतिष्ठास्वकर्मणि पूर्वद्वारमारभ्य चतुर्द्वारेषु चंडादीन् आवाहयेत् चंडं पूर्वे चंडी प्राग्द्वारे
याम्ये भद्रं सुभद्रं कौ प्रतीच्यां जयविजयौ उदीच्यां धाता विधातारौ अनंतरं क्रमुदादीन् पश्चाद्दिक्षु पूजयेत्
तदनंतरं शंखपद्मौ विमलाद्या अपराजिता पश्चार्हतः अनंतरं विहंगेशं च नित्यमुक्तान् तथैव च प्राकारं शंख
चक्रादीन् आवाहयेत् एवं गंधपुष्पाभ्यां पूर्ववत् अर्चयेत् तदनंतरं बलीन् दद्यात् फलाजलैः विधिश

होमः पंचोपनिषदा मंत्रैरष्टोत्तरशतं आज्य होमं मंत्रास्तु ॐ ह्रां नमः पराय परमात्मने नमः ॐ ह्रीं नमः
पराय पुरुषात्मने नमः ॐ ह्रूं नमः पराय विश्वात्मने नमः पराय निरंजनात्मने नमः ॐ ह्रौं नमः पराय सर्वात्म
ने नमः इति पूर्णाहुतिं तत्प्रतिमायां जुहुयात् नमस्तुभ्यं भगवते जातवेदस्वरूपिणे नारायणाय हविषे
कविषे यथातथा होत्रे ह्यस्य व्यदेवा नामात्मने परमात्मने नमः निधिं साचिरं देवप्रतिमायां हिताय नमः
इत्युपतिष्ठेत् भगवतः दक्षिणे हस्ते स्वर्णं तु नारद्वां कुर्यात् अनंतरं जलधिवासं कारयिष्यामः प्रथमं भारप
रिमितं शालीतंडुलं तदुपरि तदर्द्धं तिलान् निक्षिप्य पद्मं विलिख्य कुशान् स्तीर्य नूतनपटं निक्षिप्य तदुपरि
सिंहासनं निधाय पुष्पाद्यक्षतैः प्रोक्ष्य तस्मिन्निष्ठे देवमारोप्य मूलमंत्रोच्चारणपूर्वकं सुप्रतिष्ठितो भगव
न्ति जगद्गुरुं भगवंतं ध्यात्वा अर्घादिमधुपर्कांतं राजतं कृत्वा अनंतरं पीठं तत्रैव निवेश्य विल्वस्य पुरतः भार
परिमितं तंडुलं चतुरस्रं कृत्वा तदुपरि आम्रपल्लवकूर्चं पंचरत्नं पंचपल्लवं श्रीफलसहितं कलसं चतुष्पथे नि
क्षिप्य उदकैः पूरयित्वा सर्ववस्त्रमभिमंत्र्य भगवंतं प्रार्थयेत् इत्थं स्वागतं देवदेवेश विश्वरूप नमोस्तु ते अ
द्यैव त्वदधिवासनेन अद्य कर्मसहायता इति अर्घपाद्यादिसर्वकं स्तापयेत् नववस्त्रेण प्रतिमां संवेष्ट्य

कूर्चं पंचगव्यं ३

अब जलाधिवास करने की परंपरा कुंभ को पंचगव्य कर के फेंक जलाधिवास कुंड पर मृत्तिका लेप कर कुंभ करना

ॐ द्रां प्रदर्श्य भगवंतं देव्यासंमहितं रत्नपीठे प्रविष्य पंचगव्यैः पूर्वमंत्रेण स्नापयित्वा तैलेनाभ्यंज्य एतत् माष
मुद्गहरिद्रादिचूर्णैरुद्वर्तनं च रत्नस्नापयेत् विधिवत् पश्चात् उष्णतीर्थजलैः शुभैः वामदेवमभिध्यायेत् उद्धि
११ माणेन्तरिक्षं वै वामदेव्यं अन्तरिक्षएवैनं प्रतिष्ठितमधीते अथो शांतिर्वै वामदेव्यं इत्यभ्यंगनं कषायो
दकं कषानचि क्रमाभुवं द्रौ तौ सदा रथसखा कयासचिष्ठया रक्षा उद्वर्त्तदेवस्य त्वा इत्युष्णोदकं प्राप्या
पश्चसमेतु ते विश्वतः सोमरश्मीयं भवा वाजस्य संगते इति पयस्नानं दधि क्राताविषत् इति दधिस्नानं शुक्रम
सि वसो सूर्यस्य रश्मिभिः इति घृतस्नानं मधुवाता ऋतायते मधुमधीर्गावो भवंतु नः इति मधुस्नानं शर्करा अभ
वत् शर्करा शर्करं वज्रो वै शर्करा पशुरग्निर्यं शर्करा भिरद्भिः परिमिनोति वज्रेणैवास्मिन् पशुन् परिग
ह्णाति इति शर्करास्नानं यूः फलिनी या फलाद्दधि क्राताविषत् इति दधिस्नानं शुक्रमसि वसो सूर्यस्य रश्मि
भिः अग्निर्हंस इत्यंतं इति पंचस्नानं अपुष्पा अपुष्पा इति पुष्पोदकस्नानं हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जा
तः पतिरेक आसीत् सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम इति सुवर्णोदकस्नानं य
वासि धान्यराधो वाजो मधुसूदन नरिनीतं सर्वपापानां पवित्रमिह विद्यते इति यवोदकस्नानं गंधद्वारेति गं
धोदकस्नानं इति हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजां चंद्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मम आवह इति हरिद्रास्नानं रुषदंते विष्णुर्वासवा आक्रा
मणं तन्मे ऋषस्त्वविवेश हेयं इति रत्नोदकस्नानं देवस्य त्वा इति नारिकेलोदकस्नानं पुरुषसूक्तेन शुद्धो

कषायं जे ६३

११

तु वल्प नं परिकीर्तयेत् अथ अस्त्र कर्म चैव ये भूतां प्राग्दिशि स्थिताः प्रजापरितुष्टास्ते गृह्णन्तु बलिं द्विजाः वृक्षेषु
पर्वतानेषु ये दिक्षु च संस्थिताः भूमौ व्योम्नि स्थितायेच बलिं गृह्णन्तु ते पि विनायकाः क्षेत्रपालाये चान्ये बलिकांक्षि
णः पर्षदाश्चैव प्रतिगृह्णन्तु मे बलिं चंडाश्च कुमुदाद्याश्च ये भूताः सर्वतः स्थिताः आगच्छन्तु च ते सर्वे
गृह्णन्तु तदिमं बलिं हस्तौ पादौ प्रक्षाल्या चम्य पवित्र पाणिः प्राणायाम्य शुद्धात्मा ध्यायेत् ब्रह्मसनातनं प्रह
रे अर्घादि षोडशोपचारैः नृत्य वाद्य गीत वेद घोषेण सार्कं पत्रो जागरणं कुर्यात् इति जलाधिवासः आ
चार्यः ऋत्विजैः सह मूलमंत्रद्वयं मंत्रराजं कृष्ण वासुदेवादि जापं कुर्यात् चतुर्द्वारेषु चतुरो वेदान् धर्म
इतिहास पुराण श्री भाष्यादीन् पाठयेत् एवं उत्सवकर्तव्यः द्वितीये दिने आचार्यो ऋत्विजश्च सर्वे कृतस्ना। वि
ना कृतोष्णीषपुंडाः नवांबरधारिणः नवभूषणालंकृताः शालायां प्रविश्य अनंतरं पुष्पाहं वाचयित्वा पूर्ण
हं जलेन यागमंडपं तं प्रोक्षयेत् भगवतः अर्घादि सर्वं तत्र आहृत्य अत्रिष्ठ ब्रह्मस्यते इति मंत्रेण भगवंतः उ
त्थाय जलविष्टरे प्राङ्मुख मुपवेश्य निंबफलोदकैः संशोध्य अभ्यंगनादि सर्वं कं पंचगव्यार्घादि पय
सा दधि नासर्पिसा मधुना शर्करया कषायं भस्मोदकेन सलिलेन इक्षुरसेन आम्ररसेन प्रक्षा
दकेन अभिषेचयेत् देवस्य परतः सूत्रविष्टितान् कलशान् सकूर्चैः वस्त्र सहितान् धान्यशिषु अष्टाद
शसंख्याकान् संस्थाप्य तेषु एतत्सर्वं निधाय मूलमंत्रेण अभिमंत्र्य तुलसीदलानि क्षिप्य स्थि

प्रथम जलाधिवास सहस्रनाम इतीतीवेदि परस्थान करा करके फेर

नृसूक्तानृचतुर्मंत्रांस्तथा जपेत् व्यापकमंत्ररत्नं चतुर्मंत्र इति स्मृतं पुराणं शांतिपठनं कुर्यादत्र
समाहितः चतुर्दिक्षु मानकुंभान् सर्वेदान्यपि कल्पयेत् अनंतरं अष्टोत्तरसहस्रसंख्याकान् कलश
पान् पालं कृतान् तंडुलोपरि न्यस्य नानामंत्रैश्च अभिमंत्र्य सुरभिमुद्रां प्रदर्श्य रक्षां कुर्यात्
अनंतरं स्वगृह्योक्तप्रकारेण चतुर्षु कुंडेषु होमं कुर्यात् तदिष्टं श्रावणप्राणनायस्य श्रीभगवदा
ज्ञया भगवत्प्रीत्यर्थं अग्निर्विवे ज्योतिष्मन्मुध्वार्थं च नानासूक्तैर्नानामंत्रैः होमं होष्यामि अ
नुज्ञां कृत्वा ब्राह्मणान् तोषयेत् तदिष्टं मूलमंत्रेण कुंडं वीक्ष्य अस्त्रमंत्रेण प्रोक्षकवचमंत्रेण
प्रोक्षगंधपुष्पादिभिरलं कृत्य मध्ये हि शुक्लि प्रारे मांत्रिखिलासूर्यकांतास्त्रजं वैदिकाग्निदि
व्यपात्रे नादाय कन्यादानं संपरिस्त्य कुंडस्योत्तरतः कृत्वा वीक्षणादिभिः संस्कृत्य कुंड
मध्ये न्यस्य दर्भपुंजैः परिस्तीर्य अग्निं परिस्तीर्य अग्निं प्रज्वाल्य दक्षिणतो ब्रह्मणा साध्यस्तु
गाज्यस्थाली प्रोक्षणीस्रुक्पात्रे अस्त्रमंत्रेण प्रोक्षितं उत्तरतो अधोमुखान्निदर्भान् संनिधाय
दर्भद्वयेन पवित्रं कृत्वा प्रोक्षणीपात्रे पवित्रे निधाय उदकं संस्थाप्य प्राचीं श्रीसूक्तेन पुष्प
ज्ञानानि पात्राणि प्रोक्षणीपात्रमादाय प्रोक्षणीपात्रं बद्ध्वा मुखं संमुखं प्रोक्षितं उत्तरतो
निधाय दर्भैः प्रच्छाद्य आज्यस्थालीमादाय आज्यं निरूप्य प्रोक्षणादिभिः संस्कृत्य द

द्वैरभिषेचयेत् अष्टदिक्षु पूर्वस्थापितकलशोदकेन पवमानसूक्तेन स्नापयेत् वस्त्रभूषणादिभिरलं
कारयेत् अर्घादिषोडशोपचारान् दत्वा तदित्यं अभिषिच्य शुभैः वस्त्रैर्वेष्टयेत् सुमनोहरैः नीराजनं त
दा कुर्यात् पश्चादाचमनं कारयेत् अर्चयेत् गंधपुष्पादिधूपदीपनिवेदनैः समंत्रा च बलिं च
त्वारयेत् मंत्रनिवेशयित्वा चतुर्द्वारसमायुक्तां चतुर्भिस्तोरणैर्युतां वितानादिसुशोभाढ्यां वेदीं कुर्यात्
मनोहरं पूर्ववत् सस्यसंयुक्तां सरावान् परिकल्पयेत् दीपकान् स्थापयेद्दिक्षु पताकान् सुमनोह
रान् धान्योपरि आद्यं व्याघ्रचर्म शुभावहं तस्मिन् कोशेषु वसनं कुशानास्तीर्य कामलान् सुमिष्टिवपुष्पा
णि विकिर्य तस्मिन्निवेशयेत् पात्रभारधान्यराशिं कृत्वा तदुपरि कुशानास्तीर्य तदुपरि व्याघ्रचर्मरक्त
पीतादिकोशेषु सप्तसर्पाकारपिष्टा तदुपरि पुष्पसर्पं कृत्वा तदुपरि भगवंतं शयित्वा अच्छिद्रपविक
त्रं आच्छादयेत् अर्घादिनीराजनांतं कृत्वा भगवतः पुरतः प्राणप्रतिष्ठाकलशं धान्यराशिषु स्थापि
रजतताम्रादिपात्रसंवेष्टनौषधिपंचरत्नं पंचलक्षं पंचपल्लवं वस्त्रकूर्चं आम्रपल्लवतुलसीश्री
पल्लवादिभिर्विक्षिपेत् अनंतरं अष्टदिक्षु कलशाष्टकान् धान्योपरि निक्षिपेत् सर्वप्राणप्रति
ष्ठाकलशं वस्त्रालंकरणीयं प्राणप्रतिष्ठाकलसे मूलमंत्रेण अष्टोत्तरसहस्रवारं जपित्वा स
रसिमुद्रां प्रदर्श्य रक्षां कारयेत् चतुर्दिक्षु जपेत् सम्यक् चतुर्वेदांश्च ऋत्विजः चत्वारो वेदभवा

(वास कर्मपटल समाप्त पत्र १५ पर समाप्त)

ततः स्नानमारभेत् महापाठ प्रत्यरात्रौ जा

क्रमं प्रत्येकं प्रतिश्रुत्तीनां तत्तद्दृष्टिश्च सर्वतः मंत्रैश्च तत्तैर्होतव्यं प्राज्यं दिह्य यथा क्रमं प्रत्येकं षडष्टसह
स्रं जुहुयात् त्रिपंत्रवित्तमंत्रास्तु मूलमंत्ररत्नद्वादशाक्षरं तत्तन्मूर्तिमंत्रैर्जुहुयात्
नामभिः केशवादिभिश्चतुर्थ्यासंकर्षणादिभिः तत्तद्द्रव्यं च होतव्यं निस्थ्ठिक्रान्स
नामभिः होमं कृत्वा विधानेन रात्रौ जागरणं चेत् कर्तुं चोपवसेत् सम्यक् प्रतिपामं पूज
येत् तत्पारं जन्यां कुशपांकृत्वा पयाविधिरं जांकृत्वा तु विधानेन पूर्ववत् समाहि
तः प्रनंतरं प्राचार्य ऋत्विजांश्च सर्वे कृतस्नानाः सर्वं तत् वासुहोमं कृत्वा वासुनीम
भार्गवस्य सहैरस्वद जस्वत्वेवं स्वरात् हंतुगतसे स्ताडितः स्तले प्रपतत् मर्चयेत्
सर्मसात् छंन्यायनो चयेत् प्रासुरं कर्मभवेत् मंदिरस्य दक्षिणे पार्श्वे वासुदेवं संहु
लाद्युपरि प्रभिलिख्य सर्वावयवसंयुक्तं तदुपरि दर्भसमकमंतकूर्चे निक्षिप्य तत्र वा
सुनाथं गंधपुष्पादिभिरभ्यर्च्य वासुदेवस्य शिरसि श्रीवत्सालिने नमः बाहुमूले
हंसध्वजाय नमः कर्परे कुमाराय नमः हस्ते विनाकाय नमः पादमूले प्रश्वनीदेवता
भ्यो नमः मध्ये चंद्राय नमः पार्श्वे दुर्गायै नमः कोर्परे ब्रह्मा मातृकाभ्यो नमः बाहुमू
ले स्थाणवे नमः हृदये भगवते नमः नाभिदेशे ब्रह्मणे नमः स्वदिह्नदिप्यालेभ्यो न

यह [illegible] पढ़ने पढ़ने [illegible] सम्पारंभ [illegible] है 13

र्भाग्रहणं प्रक्षाल्य प्रत्यङ्दीचीं गाराभिरुक्षतेषु निधाय प्रज्वलितैः दर्भाग्रैः संदिह्य अंगारानुत्पुनन्पवित्रेणाज्य
मुत्पूर्य्य सुरभिमुद्रां प्रदर्श्य स्रुक्स्रुवाभ्यां प्रतप्य दक्षिणं मध्यमूलानि दर्भाग्रैः संसोध्य पुनः प्रतिप्तप्य प्रोक्षदर्भानद्रि
भ्यस्य अग्नौ प्रहरति परिधीन्परिदधाति स्थविष्ठं पश्चात्तदक्षिणतोऽग्नेः संदीर्घं प्रतिष्ठ्रस्वमुत्तरतः उदयं
मध्यमं प्राग्ग्रावितयोः मध्यमपरीषु पस्य स्थपुस्तादूर्ध्वाग्रे आघारसमिधो आदधाति दध्नः अग्रेन भ्यज्य दध्नः मन्त्रो
रूत्य ब्रह्मणे स्वयमलं कृत्य अग्निं नमस्कर्मणि ब्रह्मदध्नः माधास्यतिब्रूयात् आधत्स्वेति प्रत्युक्ते आज्याभ्या
गारा मषारयति दध्नः मन्त्रो निक्षिप्य तत् स्रुक्स्रुवाभ्यामाज्यमादाय दक्षिणपरिधिसंधिमारभ्य शनैस्तमीशा
नो नं जुहुयात् प्रजापतये इदं नमम मेति एवमुत्तरपरिधिमारभ्य आग्नेयां तं जुहुयात् इंद्राय इदं नमम मेति स्रुवेण
ज्यमादाय होमवस्तुनिशेषयित्वा अग्नेतेजस्वाहेति अग्नेर्दक्षिणभागे जुहुयात् सोमाय स्वाहेति अग्नेरुत्तर
भागे जुहुयात् प्रजापतये स्वाहा इंद्राय स्वाहा इति वरं जुहुयात् द्विशीर्षकं सप्तहस्तं त्रिपादं सप्तत्रिहकं धर-
दंशक्तिपाणिं चविभ्राणं स्रुक्स्रुके तथा इत्यग्निं ध्यात्वा आस्थापनं कृत्वा ततः पश्चात्सूक्तैर्विप्रकाशकैः सर्वत्र
कारणं सूक्तैर्जुहुयात् प्रतिचरं वह्निजा अग्नेदेवेति सूक्तेन तदक्षिणेन तदनंतरं प्रत्यगिति सोमस्य कमिति परोक्षा
चेति चान्तरे श्रीसूक्तप्रकाशसूक्ताभ्यां प्रतिदिक्षु यथाक्रमं चतुरो वेदाश्च होतव्याः यथाशक्त्यानुसारतः एकैकमन्त्र
वाक्येन ब्रह्मणा मृत्यमेव च चतुर्दिक्षु च होतव्यं तत्र दुग्धैः यथाक्रमं चतुर्षु पयसा दिक्षु वन्हीं समिद्भिश्च यथा

वो य स्या यसितवर्णाय स्वाहा भं नमः इति न्यसेत् वकाराय स्फटिकवर्णाय मत्यात्मने स्वाहा वं नमः सि
फकाराय पाटलवर्णाय अहंकारात्मने स्वाहा फं नमः हृदि यकाराय सितासितवर्णाय मनात्मने स्वाहा
१४ यं नमः हृदि क्लकाराय कृष्णवर्णाय शब्दतन्मात्रात्मने स्वाहा दं नमः हृशो यकाराय नीलवर्णा
परतन्मात्रात्मने स्वाहा यं नमः तालवीतकाराय शीतवर्णाय गंधतन्मात्रात्मने स्वाहा तं नमः नासि
काग्रं नाकाराय पाटलनिभाय श्रोत्रात्मने स्वाहा नं नमः नेत्रयोः ठकाराय शोणकाराय जिह्वात्मने
स्वाहा ठं नमः जिह्वाग्रं ठकाराय सितवर्णाय घ्राणात्मने स्वाहा ढं नमः घ्राणे जकाराय रक्तसित
वर्णाय वागिंद्रियात्मने स्वाहा जं नमः वाग्धरे कंकाराय रक्तवर्णाय करात्मने स्वाहा ङं
नमः करयोः ऊकाराय रक्तवर्णाय पादतन्मात्रात्मने नम स्वाहा जं नमः पादयोः छकाराय रक्तव
र्णाय अयात्मने स्वाहा छं नमः अपाने चकाराय मेहात्मने स्वाहा चं नमः मेहनिङ्गे काराय पीतव
र्णाय एष्वीएष्वात्मने चक्षुः श्रवकाराय स्वाङं नमः पादादिजानुपर्यंते पकाराय अर्द्धचंद्राशहृ
शाय जलात्मने स्फटिकाराय स्वाहा पं नमः जान्वादिगुह्यपर्यंते ठकाराय लोहितवर्णाय तेजात्मना
य स्वाहा गं नमः गुह्यादिनाभिपर्यंते सकाराय धूमवर्णाय वाय्वात्मने स्वाहा खं नमः नाभ्यादि
कंठांते ककाराय निराकाराय अजनाभाय नमः स्वाहा समनाय नाभौ उदानाय नमः कंठ १

समि

मः उत्तरपार्श्वे क्षेत्रपालाय नमः इति संजप्य वास्तुनाथस्य पश्चिमे भागे वाशानुमितमं
त्रैः आम्रसमिधः अपामार्गः खदीरसमिदर्भिः जुहुयात् खदिरादिसमिधस्तमूलमं
त्रेण संख्याकाः तन्मंत्रेण जुहुयात् पूर्वपक्षे ऋग्भिः षोडशाहुतिः चरुं पात्रे वास्तु
देवानां चरुणा जुहुयात् देवेभ्यो बलिं दद्यात् क्षेत्रपालाय च बलिं दद्यात् अनंतरमं
दिरं मापयित्वा गोमयादिभिर्विलिप्य शुद्धचूर्णैः रङ्गैर्विचित्रपत्रकैः रंगवल्यादिभि
रलंकृत्य दीपान् संवर्द्धयित्वा यावदिप्रतिलोमान् दूरान्निस्तार्य्यः स्नात्वा धृतोष्णी
षः शुभ्रांशुकं मंदिरे कौसिंहासनादुपरि उत्तरपार्श्वे नवनिधिं निक्षिप्य स्वगीतकाद्युप
ठहृदं हृभिर्वेदघोषैर्विचित्रमंदिरं कारयित्वा वेदनाभिः परिमलं कृत्वा ऋत्विजो
सहपुत्रान् वरयित्वा रत्नसिंहासनं हृदयशूरमंत्रेण अष्टोत्तरशतवारं प्राणा
मूलमंत्रेण अभिमंत्र्य अभिमुद्रां प्रदर्श्य रक्षामंत्रेण रक्षां कृत्वा अनंतरं प
रोशालां प्रविश्य भगवद्राधनपूर्वकं उत्तिष्ठ ब्रह्मस्पते इति मंत्रेण भगवंतं उ
त्थाप्य प्रधानकुंडस्य उत्तरपार्श्वे नवीनपीठे निवेश्य मधुपर्कं निवेद्य आचार्य
प्रद्यपूर्वं अंगहोमं कुर्यात् आकृत्यंतेप्रतिमायाः अवयवेषु न्यसेत् मकारयत्रो

मे उपविश्य च स्वभूषणादिभिरलंकृत्य प्रथमोपचारांते कृत्वा तिरोधानपटं कृत्वा मंगलद्रव्यानि व
हिरंतरस्थाप्य नेत्रोन्मीलनं कारयेत् तदुदिष्टं आचार्यः भगवतः पृष्ठभागे आनीय विश्व
प्राणानायम्य कृपापूर्वकं भगवंतं ध्यात्वा नेत्रोन्मीलनं करिष्ये इति संकल्प्य अंगु
ष्ठांगुलिपरिमितया दृढसूत्रेण सर्वकयाग्रं कृत्वा दक्षिणनेत्रं निमिषात् सर्पिषा
कृत्वा वामनेत्रं चित्रं देवानामिति उच्चारयेत् नेत्रोन्मीलयेत् ततो अंजनेन अंजनं
कुर्यात् दृष्टं जलेन गृहं जानं हिमवत उपरि तेन वामाक्षि तेजसे वर्चसे च लाप्य
देव्यादीनामपि एवं नीराजनं ततो दध्यात् मंगलद्रव्यसंयुक्तं छत्रं च चामरं
चैव दर्पणं च सनर्तकं यत् दर्शयेत् गो वेश्या वरश्रीयेद हेमं गुलान् मुद्रां च शास्त्र च
कांदीनवधान्यं तथैव च सुवर्णं रजतं दूर्वा हरिद्रां मधु सर्पिषि अक्षतास्तु सर्वपाश्चै
वमंगलापरिकीर्तिताः शंखं च कूर्पासकाच भेरी दर्पणमंडलं वैनतेयं पतस्यपुष्पं
कुंभं आपि प्रदर्शयेत् शंखं च कुंडं गदापद्मं मुशलं खड्गमेव च धनुश्च वनमालाश्च अष्टमंगलाः
प्रकीर्तितः यवगोधूमं मुद्गं तिलमाषाप्रियंगवः कुलत्थ व्रीहिसाम्यानि नवधान्यप्रकी
र्तिताः अनंतरं यानमारोप्य वेदवाद्यघोषैः निजमंदिरं प्रवेशयेत् रत्नसिंहासनाद्युत्तर

पहस
भकृत्य
धान्या
धिवास
परकार
कथा या
धिवाससे उक्त
करके

इति तीर्थप्रदेशकृत्यं समाप्तं चतुर्थप्रदेशे यात्रा प्रासेव्य नगरे परिभ्रमणं च
विधिसंचारः
कृत्वा कृत्वा कृत्वा

देव्यानाय नमः स्वाहा व्यानाय नमः सर्वदेशे नागाय नमः स्वाहा कूर्माय नमः ॐ कृकराय नमः स्वाहा कृके
शराय नमः स्वाहा जनं जयाय नमः स्वाहा इति मूलमंत्रेण सर्वाङ्गहृदयादिस्थाने न्यसेत् तत्र सदर्शनाद्या
धनिन्नन्नमन्त्रैर्हृत्वा तत्तत्स्थाने न्यसेत् एवं श्रीयादिन्यासं कृत्वा मधुनाशतावृत्तिजुहु
यात् संपाते नदेवस्तु ध्येत् तत्पायसादध्नाच हुत्वा जठरं स्पृशेत् आज्येन हुत्वा वक्त्र
स्पृशेत् संपाते सर्वाङ्गं शिरश्च स्पृशेत् अनंतरं पूर्णाहुतिं कारयेत् सुप्ते अग्नौ इति मं
त्रेण अनंतरं महामिकं कारयेत् तदिष्टं नीराजनं कृत्वा अर्घादि सर्वं कं पंचामृतस्ना
नं कारयेत् शुद्धवस्त्रमाच्छाद्य एवं प्रतिष्ठापितसहस्रघटोदकैः सहस्रधारापात्रेण
अभिषिंचयेत् सर्वौषधि बीजाघकं सर्वरत्नानि पुष्पफलतुलसीदलानि सहस्रधा
राकलसे तत्र मंत्रं पठन् नानासूक्तैः अभिषिंचयेत् तदिष्टं सपितरं देवेण्यवि
त्रामाह देवेण्यमतिविश्वजन्यां यामुस्य करावो अतुहस्रपो नां सहस्रधारं पयसा स
हीगं अनंतरं अष्टदिक्षु सर्वस्थापयेत् नाकलशोदकैः पुरुषसूक्तं ऋषिः अभिषि
चयेत् अनंतरं आचार्यः प्राणप्रतिकलशोदकेन मंत्रैरन्यान् अष्टोत्तरशतवारं शि
रसि हृदयादिपंचस्थानेषु संप्रोक्ष्य मंत्रेण अभिषिंचयेत् अनंतरं अलंकारास

रसिप्रकृतत्वायनमः बुद्धितत्वायनमः श्रोत्रयेः स्पर्शतत्वायनमः इतिस्वचिरूपतत्वायन
मः चक्षिश्च रूपप्रातिष्ठा पुंपुरा भवत स्य प्राणोभोगायनो वंमंतं प्राणाय नोगायत्री
नासंत्रिगायत्रे गायत्रं गायत्रा दुपपंक्त रपा पंक्तेशोस्त्रि वृत्त त्रिवृतो रथंतरं रथं
तरा द्वशिष्ट ऋषिः प्रजापति गृहीतः पाद्या प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः श्रीह्रीक्रोहंसः
श्रीमन्नारायणस्य प्राण इह प्राणः इह जीव्यिन्तः सर्वेंद्रियाणि वाङ्मन प्राणाः सुखं चिरंतिष्ठतु स्वा
हा एवं मंत्रेण तत्तत्स्थाने स्वस्वस्थ सेत्र अयं दक्षिणे विश्वकर्मा तस्य मनो विश्वकर्मणं श्रीमा
नसंत्रिष्टुभ त्रिष्टुरोड्मेडादंत ध्यानं तथा माश्च चदशः पंचदशः पंचदशाः बृहत्त्वं बृहता
भरद्वज ऋषिः प्रजापति गृहीत्वा यात्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः श्रीह्रीक्रोहंसः श्रीमन्नारा
यणस्य जीव इह स्थितः सुखं चिरंतिष्ठतु स्वाहा अयं पश्चाद्दिश्य वरुणं वैश्वदेवं
वीणि जगति वा वीं जगत्या वरुणं मरुद्भिः मा छक्क्ष्मक्रान्तु सप्तदशा हेरूपाद्दिश्वामि
त्र ऋषिः प्रजापति गृहीत्वा त्वा गृह्णामि प्रजाभ्यः श्रीह्रीक्रोहंसः श्रीमन्नारायणस्य
सर्वेंद्रियाणि इह गत्वा सुखं चिरंतिष्ठतु स्वाहा अयमुत्तरात्सुर्वा तस्य श्रोत्रं सोरथंसरथं
अनुष्टुप छारद्यनुष्टुभ स्वारथंस्वरान्मंथिनः एकविंशा एकविंशा द्वे राजा जमदग्नि

पार्श्वे चंडुलोपरि कलसं दूर्वयस्यापि तेन लक्ष्मीपूर्वकं प्रवेशयेत् अतो देवा इति मंत्रेण स्थापये
त् सुमुहूर्ते सुलग्ने वा पीठे निवेशयेत् अतो देवा इति मंत्रेण सम्यक् संस्थापयेत् ह
रिं ध्रुवं न इति आचार्यः यथासंभवं आसने उपविश्य शुद्धि कृत शुद्धि दिग्बंधनादि
पंचोपनिसंन्यासं च कृत्वा भगवंतं ध्यायेत् तद्दिव्यविग्रहं परमानंदं तमसः परम
व्ययं ज्ञानशक्तिबलैश्वर्यवीर्यतेजसमन्वितं अपाणिपादमपश्यं मचक्षुश्र
वणादिकं सर्वतः कूटवाक्यादि सर्वज्ञोन्द्रियसमस्वगतागतविनिर्मुक्तं रविकोटि
समप्रभं चैतन्यं सर्वगं नित्यं व्योमातीतं तदद्भुतं किं सामान्यं जगत्यस्मिन् मूलमंत्रो
रं परं एवंविधं महाविष्णुं आत्मादि प्रणवात्मकं तत्पुरुष्यं महाविष्णोर्विनिको
ज्यं विष्णोर्वा हृदये पद्मे समावाह्य चेतसि क्रमात् इति संचिंत्य समभ्यर्च्य वं पानमः
पुरुषात्मने नमः इति आवाह्य प्रांजलिः संतादृशं ते जीमयंत्रिपाद्यं स्वरूपं नासय
णं रं वानमः परमात्मने नमः पं इति मंत्रेण पीठस्य विवेनिवेशयेत् ततः ब्रह्म
रंध्रमार्गेण अंतः प्रविश्य सर्वतः व्याप्यस्थितं भगवंतं तस्मरेत् अनंतरं ब्रह्मरंध्रे
एवेन विहितं भवेत् न्यासजालं न्यसेत् पुरुषात्मने नमः प्राणात्मने नमः इति शि

एवेत्यनंतरं मंदिरस्य अग्रदिक्षु सर्वं वस्तु बलिं दद्यात् अनंतरं स्नात्वा आचम्य पुनः सांगं प्रविश्य
सर्वस्यापि नपालिकाः देवताश्च उद्वासयेत् मंदिरं प्रविश्य भगवंतं प्रदक्षिणीकृत्य
स्वासने उपविश्य जपेद्दशाक्षरमंत्रं रत्नमंत्रं प्रसादयस्तु सांनिध्यं इति संप्रार्थ्य
यद्धरितत्र प्रदक्षिणं कृत्वा नमस्कृत्वा पुनः पुनः आविष्कारवाचनं कुर्यात् वेदमंत्रैः शभा
वहैभो जपित्वा ततो विप्रान् सहस्रं तु शतं तु वा दद्यात् वेदक्षिणां च यथाशक्ति
जपेत्ततः गोभूहिरण्यवस्त्राद्यैः आचार्यं परितोषयेत् महोत्सवं पंचरात्रं यथानुसा
रतः एवं प्रतिष्ठां कृत्वा तु पंचरात्रोक्तमार्गतः तत्र देवस्य सांनिध्यं याति नारायण
णहरिः इति श्रीनारदपंचरात्रे प्रकार प्रतिष्ठाविधिः वेद उद्धार समाप्तः॥

उद्यमेनारंभे [illegible]

ऋषिः प्रजापति ऽहीन तया वया श्रीं ऽ ह्लामि प्रजाभ्यः श्रीं ह्रीं क्रौं हंसः श्रीमन्नारायणस्य वाङ्म
नच इह आगच्छ इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठ तु स्वाहा यमुपरि तस्यै वाङ्मांहेमं तोगाच्यायनपं। =2
क्रौं हंमं तोपं क्रौं निध नव तु निध स्वतः आगच्छ जिष्णवः स्वयः स्त्रियं सोत्रिणवः त्रयस्त्रिंशाभ्यं
यक्ष ऽ रे नतैविश्व कर्मर्षि प्रजापति ऽहीन यातया वाचं ऽ ह्लामि प्रजाभ्यः ॐ क्रौं ह्रीं क्रौं हंसः
अस्य श्रीमन्नारायणस्य वाक् इह आगत्य सुखं चिरं तिष्ठ तु स्वाहा ततः पंचांगदशांगादित
त्तन्मंत्रादित त्तन्मंत्र। ततन्यासादिकं कुर्यात् ततः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय इति मंत्रेण
आत्मानि सुखं भगवंतं भावयित्वा पुष्पं किंचिदुपोपस्थागतं हरिं दृष्ट्वा पेत् अनंतरं मूलमंत्रे
ण न्यासं कुर्यात् एवं श्रीपादि देवीनामपि न्यासं अर्घादि महानैवेद्यांतं कृत्वा तांकूलं समर्प्य
मौराजनं कुर्यात् अनंतरं देवस्य पार्श्वे समासाद्य दंडवत् प्रणम्य बद्धांजलिपुटः इमां
गाथामुच्चारयेत् भक्तवत्सल भक्तानां अभिप्रीतार्थसाधक प्रार्थये त्वां महं वंदे मदनुग्रह
काङ्क्षया सन्निधिं सुचिरं स्थाने कल्पये अद्य पास्व प्रसीद देवदेव शरणागतमपि ऽ हाणमे
रतिविज्ञापये देवं वासुदेवं तु देशिकः नस्तुभ्यं भगवते राघवाय महात्मने रावणादिग्रहे
रानिरसने एवं प्रार्थ्य अनंतरं ऋषिजे स्माकं मंदिर द्वारे जयविजयादीन्नित्य मुक्तान्प्रति